विचार बिन्दु

कोई इन्सान दो आदमियों की एक साथ खिदमत नहीं कर सकता; चाहे प्रभु की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। –बाइबिल

क्या अमेरिका को भी आँख दिखानी पड़ेगी?

जब से डोनाल्ड ट्रंप ने दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति का पद संभाला है, वे अपने निर्णय, वक्तव्य एवं व्यवहार से भारत को अपमानित करने का कोई अवसर नहीं छोड रहे हैं ।

इसकी शुरुआत राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण समारोह से ही हो गई थी, जब शपथ ग्रहण समारोह में चीन के राष्ट्रपति सहित अनेक राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया गया, किंतु भारत के प्रधानमंत्री को निमंत्रण नहीं दिया गया । अमेरिका में भारत के दूतावास द्वारा जैसे-तैसे भारतीय विदेश मंत्री के लिए निमंत्रण की व्यवस्था की गई और उन्होंने शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया। यह विचित्र इसलिए लगा कि ट्रंप के पहले कार्यकाल में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप की नजदीकियां और दोस्ती कई बार देखी गई । उसका कई बार जिक्र भी भारतीय प्रधानमंत्री ने किया। जिस समय ट्रंप अहमदाबाद आए थे तो बहुत बडे समारोह में दोनों ने पूरे स्टेडियम में हाथ में हाथ डालकर पैदल चक्कर लगाया था। इसी प्रकार जब अमेरिका में 'हाऊ डी मोदी' कार्यक्रम किया गया तो वहां भी बडी संख्या में अमेरिकी भारतीयों के सामने उन्होंने अपनी दोस्ती का प्रदर्शन किया।

राष्ट्रपति पद संभालते ही ट्रंप ने अवैध तौर पर अमेरिका में रह रहे भारतीयों को तत्काल भारत भेजने के निर्देश दिए। इसकी पालना में 100 से अधिक भारतीयों को पांवों में बेड़ियां डालकर अमेरिकी सेना के विमान से भारत भेजा गया । यह दृश्य भारतीयों के लिए बड़ा अपमानजनक था। इसके विरोध में कोई प्रतिक्रिया या टिप्पणी भारत सरकार द्वारा नहीं की गई। शायद इसी का परिणाम था कि बाद में भी भारतीयों को इसी प्रकार से भेजा जाता रहा।

अमेरिका में रह रहे कई भारतीयों के वीज़ा केवल ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर ही निरस्त करने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई। इससे वहां पढाई कर रहे छात्रों और वहां पर कई वर्षों से नौकरी कर रहे भारतीयों पर अनिश्चितता के बादल मंडराने लगे। यह कदम भारतीयों के हित के विपरीत था इस बारे में भारत सरकार ने कोई प्रतिकार नहीं किया।

1 अप्रैल 2025 से डोनाल्ड ट्रंप ने अचानक 'टैरिफ' अर्थात अमेरिका में आयात होने वाली वस्तुओं पर आयात शुल्क बहुत बढ़ा दिया। इसके कारण भारत से अमेरिका में होने वाले निर्यात पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ने की आशंका उत्पन्न हुई । उल्लेखनीय है कि भारत अमेरिका से जितना आयात करता है उससे कहीं अधिक अमेरिका को निर्यात करता है। जैसे ही अमेरिका ने टैरिफ बढ़ाया तो भारतीय वस्तुएं अमेरिका में महंगी होने लगीं, जिससे उनके निर्यात पर प्रभाव पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में इन वस्तुओं के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना बनी। राष्ट्रपति का यह निर्णय भारत के उद्यमियों के हित के विपरीत था किंतु इस बारे में भारतीय विदेश मंत्रालय अथवा प्रधानमंत्री ने कोई विरोध सार्वजनिक रूप से दर्ज नहीं कराया ।

राष्ट्रपति ट्रंप के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार की हद तो तब हो गई जब उन्होंने 10 मई, 2025 को भारतीय समयानुसार लगभग 5:30 बजे अचानक एक ट्वीट करके दुनिया को सूचित किया कि उनकी मध्यस्थता के कारण भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष पर विराम लग गया है। उनका यह कथन एकदम अनुचित था क्योंकि भारत, 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से, पहलगाम के बर्बर आतंकी हमले में लिप्त पाकिस्तानियों के आतंकी ठिकानों पर लगातार हमले करके उन्हें ध्वस्त कर रहा था। भारतीय सेना ने बड़ी बहादुरी से बिना नागरिकों को नुकसान पहुंचाए उनके आतंकी ठिकानों पर बड़ा कठोर प्रहार किया था। राष्ट्रपति ट्रंप की छवि अचानक अजीबोगरीब बयान देने की रही है, किंतु इस बार उन्होंने अपने द्वारा कराए गए संघर्ष विराम की बात लगभग 5-6 बार विभिन्न माध्यमों से दोहराई। अत: यह नहीं कहा जा सकता कि आकस्मिक रूप से उन्होंने यह बात कह दी होगी। उनका यह वक्तव्य भारत के इस स्टैंड पर एक प्रकार से हमला था कि वह भारत और पाकिस्तान के बीच किसी तीसरे की कोई मध्यस्थता स्वीकार नहीं करेगा। ट्रंप ने तो यहां तक कह दिया कि किसी न्यूट्रल स्थान पर भारत और पाकिस्तान की वार्ता कराई जाएगी। ट्रंप के इस ट्वीट के द्वारा दिए गए बयान पर भारतीय प्रधानमंत्री ने कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की और न ही विदेश मंत्रालय ने इसका खंडन किया।

भारत और पाकिस्तान को एक ही तराजू में रखने की राष्ट्रपति ट्रंप की इस कोशिश को भारत द्वारा नकारा जाना चाहिए था, क्योंकि भारत आतंक का शिकार था और पाकिस्तान, आतंकी गतिविधियां अपने देश में पनपाने का आरोपी था। भारत में जहां 'जनरल इलेक्शन' होते हैं, वहीं पाकिस्तान में जनरल की इच्छा अनुसार इलेक्शन होते हैं। पाकिस्तान जहां इस्लामी गणराज्य है वहीं भारत एक लोकतांत्रिक, पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है। इस कारण भारत की अपनी एक विशिष्ट पहचान 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' के रूप में, प्रधानमंत्री मोदी ने बनाने कोशिश की है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा भारत और पाकिस्तान को समान रूप से महान बताने का बयान कैसे और क्यों दिया गया एवं भारत सरकार द्वारा इस पर आपत्ति दर्ज नहीं कराना समझ से परे है।

कहा जाता है कि जब बाइडन अमेरिका के राष्ट्रपति थे तो डोनाल्ड ट्रंप ने बयान दिया था कि प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका यात्रा के समय उनसे मिलने आएंगे । जब प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका गए तो वे ट्रंप से मिलने नहीं गए। इसे संभवतया ट्रंप ने अपना अपमान माना और कहीं उसके बदले के रूप में तो उनके द्वारा इस प्रकार का दृष्टिकोण नहीं अपनाया जा रहा है?

भाजपा की सांसद फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत ने अपने ट्वीट में जहां ट्रंप को 'अल्फा मेल' कहा, वहीं मोदी को सभी 'अल्फा मेल्स' का बाप बताया। पाठकों को यह बता दें कि 'अल्फा मेल' का तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो किसी समूह में सबसे अधिक मजबूत, प्रभावशाली और हावी होता है। उन्होंने मोदी को ट्रंप से बहुत बड़ा नेता सिद्ध करने की दृष्टि से यह भी लिखा कि ट्रंप दूसरी बार राष्ट्रपति बने हैं, जबकि प्रधानमंत्री मोदी तीसरी बार बने हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि भाजपा सांसद का यह बयान, जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को ट्रंप के मुकाबले में बहुत बड़े स्तर का नेता बताया, उसे डिलीट करने हेतु, भाजपा के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने टेलीफोन पर निर्देश दिए । भारत की ऐसी क्या मजबूरी है कि जब भाजपा का ही कोई सांसद अपने प्रधानमंत्री की प्रशंसा करे तो उसे भी ऐसा करने से रोका जाए?

अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा विस्तार से बताया गया कि कैसे उनके विदेश सचिव मार्क रॉबियो ने दोनों देशों से लगातार बात करके भारत और पाकिस्तान के बीच समझौता कराने की बात कही।

उल्लेखनीय है कि भारत ने 7 से 9 मई , 2025 के बीच तीन दिनों में ही पहलगाम के आतंकी हमले का बदला लेते हुए पाकिस्तान में स्थित अनेक महत्वपूर्ण आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद कर दिया था । यदि संघर्ष और चलता, तो उसका नुकसान पाकिस्तान को ही उठाना पड़ता। अत: यदि संघर्ष रोकने की कोई मजबूरी थी, तो वह पाकिस्तान की हो सकती है, भारत की नहीं। भारत के प्रधानमंत्री या विदेश मंत्रालय ने इसका प्रतिकार करते हुए किसी प्रकार का कोई सार्वजनिक वक्तव्य जारी नहीं किया।

राष्ट्रपति ट्रंप ने तो यहां तक भी कहा कि उन्होंने दोनों देशों को इस बात की चेतावनी देकर कि उनके साथ व्यापार बंद कर दिया जाएगा, उन्हें संघर्ष रोकने के लिए मजबूर किया ।

क्या भारत ने अपने स्वाभिमान को ताक में रखकर, व्यापार की खातिर, पाकिस्तान के साथ संघर्ष विराम की बात मानी? इस वक्तव्य का भी कोई खंडन अभी तक प्रधानमंत्री या भारत सरकार ने नहीं किया है।

राष्ट्रपति ट्रंप ने तो यहां तक कह दिया कि भारत और पाकिस्तान के बीच 1500 वर्ष से विवाद चल रहा है। जिस व्यक्ति को यही पता नहीं हो कि पाकिस्तान का निर्माण ही 1947 में हुआ है, फिर भी उसकी बात का खंडन तक न करना, भारत की प्रतिष्ठा पर विपरीत प्रभाव डालता है।

एक और आश्चर्यजनक बयान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यह दिया कि उन्होंने एप्पल कंपनी के मालिक टिम कुक को बुलाकर यह कह दिया है कि वे भारत में एप्पल फोन के निर्माण का कार्य बंद करके उसे अमेरिका में शिफ्ट करें। भारत में निर्मित होकर अमेरिका में बिकने वाले एप्पल फोन की कुल कीमत 1 लाख करोड़ रुपए से भी कहीं अधिक है। एप्पल द्वारा और भी नए संयंत्र भारत में लगाए जाने की तैयारी चल रही थी। हालांकि कुक ने अपनी निवेश योजना में किसी भी प्रकार के परिवर्तन से इनकार किया है, किंतु अमेरिकी राष्ट्रपति का इस प्रकार का बयान ही भारत के हितों के बिल्कुल विपरीत है।

यह स्पष्ट नहीं है कि अमेरिकी राष्ट्रपति क्यों दूसरे कार्यकाल में लगातार भारत विरोधी कार्य करने और बयान देने में संलग्न हैं एवं भारत सरकार भी उनके बयान का कोई प्रतिकार नहीं करके अपनी मजबूरी ही प्रकट कर रही है। लोगों के लिए यह समझना कठिन है कि भारत के प्रधानमंत्री मोदी की ऐसी क्या मजबूरी है कि वे ट्रंप को उनके गलत बयानों के बारे में स्पष्ट नहीं बता रहे हैं?

कहा जाता है कि जब बाइडन अमेरिका के राष्ट्रपति थे तो डोनाल्ड ट्रंप ने बयान दिया था कि प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका यात्रा के समय उनसे मिलने आएंगे । जब प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका गए तो वे ट्रंप से मिलने नहीं गए। इसे संभवतया ट्रंप ने अपना अपमान माना और कहीं उसके बदले के रूप में तो उनके द्वारा इस प्रकार का दृष्टिकोण नहीं अपनाया जा रहा है?

सरकार ने यह स्वागत योग्य निर्णय लिया है कि वह सात सर्वदलीय प्रतिनिधि मंडल अलग अलग देशों में भेज रहा है जो पाकिस्तान द्वारा आतंककारी गतिविधि को बढ़ावा दिए जाने के बारे में भारत की स्थिति को स्पष्ट करेंगे। एक प्रतिनिधि मंडल शशि थरूर के नेतृत्व में अमेरिका जाएगा,जहां भारत का पक्ष मजबूती के साथ रखा जाएगा । तब संभवतया, अमेरिका के भारत के प्रति दृष्टिकोण में कोई बदलाव आए।

फिलहाल तो भारत सरकार और विशेषकर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा ट्रंप के भारत विरोधी कृत्यों और वक्तव्यों पर विरोध दर्ज न कराना, देश की मजबूरी ही माना जाएगा। इतना मजबूर तो भारत कभी नहीं था।

अब हम इस बात को पाठकों के विवेक पर छोड़ते हैं कि वे स्वयं तय करें कि अमेरिका, विशेषकर ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में भारत के साथ इस प्रकार का अपमानजनक व्यवहार क्यों कर रहे हैं और भारत उसका समुचित प्रति उत्तर देने में क्यों संकोच कर रहा है? संभव है, इन प्रश्नों का उत्तर भविष्य में शीघ्र ही देश के नागरिकों को मिल पाएगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कुत्ते-बिल्लियों की दुश्मनी मिटाने वाले तुर्क का भारत से टकराव क्यों?

कुत्ते-बिल्ली को एक साथ रहना सिखाने वाले देश तुर्क आतंकवाद को पोषित करने वाले देश पाकिस्तान का पक्ष कैसे ले सकता हैं?

मेरी तुर्क की यात्रा के दौरान जब मैं इस्तांबुल में था तब रात बारह बजे नदी के किनारे से ऊपर पहाड़ी के रास्ते होटल जा रहा था तभी बीच में कुत्ते-बिल्लियों का झुंड देखकर डर गया। दो-तीन लोग भी खड़े थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि यहाँ कुत्ते-बिल्लियों को एक साथ रहना सिखाया जाता है। जानवरों के प्रति भी इतना प्रेम देखकर लगा कि यहाँ मनुष्य के लिए बहुत प्रेम होगा और लोगों के व्यवहार से यह महसूस भी होता है। वहाँ आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा कट्टरता के प्रतीकों को हिक़ारत से देखता है। स्वतन्त्रता के सभी हिमायती दिखे।

बिल्लियों से बहुत ज़्यादा प्यार और कुत्तो के साथ सहजीवन सिखाता तुर्क समाज जीव के प्रति संवेदनशीलता का अदभुत उदाहरण है। हम लोग जब इस्तांबुल से अंतयालय जा रहे थे तब भी एक महिला ने बिल्ली के लिए विमान में अलग सीट ली थी। भारत में मैंने देखा कि कुत्ते-बिल्ली के बीच पुरानी दुश्मनी है और कोई एक-दूसरे को देखकर राज़ी नहीं है। देखते ही झगड़ पड़ते है। तुर्क में दोनों को दोस्त बनाने की कितनी बड़ी कोशिश है।

हाँ मैं यह समझ नहीं पाया कि जानवरों के प्रति लगाव की वजह इस्लाम धर्म है या पाश्चात्य सभ्यता। यह पता नहीं लगा सका लेकिन लोगों की संवेदनशीलता का क़ायल हुआ। इस्तांबुल और अन्य सभी पर्यटन स्थलों पर पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला है। रात भर अकेले घूमने पर भी डर नहीं लगा। कहीं भी मुस्लिम देश होने के कारण कोई अनहोनी होने की आशंका की कोई बात नहीं। यहूदियों के एक धार्मिक स्थल पर भी पुलिस का पहरा देखा। पुलिसकर्मी ने बताया कि इस धार्मिक स्थल की सुरक्षा के लिए विशेष निर्देश दिए गए हैं। यहाँ कोई कट्टरपंथी उसे हटाने की बात नहीं कर सकता। इससे यहाँ की सरकार का चरित्र भी धर्म निरपेक्ष सा लगता है लेकिन देश की राजनीति मुस्लिम कट्टरता पर चलती है। इस राजनीति का व्यवहार में असर नहीं दिखता लेकिन अन्तराष्ट्रीय स्तर पर चौधराहट की बात आती हैं तो ऐरदोगन का कट्टर चेहरा सामने आता है।

ग़ुब्बारे की यात्रा कराने के लिये मशहूर कप्पाडोशिया में एक होटल मालिक से दोस्ती से कई बातें सामने आई। उसने बताया कि वह बुर्के से नफ़रत करता है। उसके परिवार की महिलाएँ भी बुर्का पहनकर नहीं जाती। महिलाएँ पुरुषों के साथ सिगरेट भी पीते दिखाई देती है। कहीं से भी यह देश मुस्लिम क़ायदों के साथ चलता नहीं दिखता। सब तरफ़ स्वतन्त्रता के हिमायती लोग हैं। अंत्यालया मानो पर्यटकों के लिए ही बना है। दूर तक मसाज केंद्रों की लाइनें हैं। यहाँ अफ्रीकी औरतें सेवाएँ देती है। एक अफ्रीकी ने बताया कि यहाँ मुस्लिम होने के बावजूद उनका शोषण होता है। तुर्क यूरोप और एशिया में बँटा है। तुर्क का राष्ट्रपति ऐरदोगन कट्टर मुस्लिम की राजनीति करता है लेकिन देश में उदारवादी सोच के लोग भी खूब मिल जायेंगे। हाल ही में उदार भारत के बजाय कट्टर मुस्लिम देश होने के नाते पाकिस्तान के साथ खड़े होने के कारण उस पर भारत ने प्रतिबंध लगाये हैं। कुछ समय बाद यह स्पष्ट हो जाएगा कि देश कुत्ते बिल्लियों में मोहब्बत कराने वाले लोगों के कहे पर चलेगा या उन कट्टर लोगों से चलेगा जो मानवता के बजाय मारपीट-आतंकवाद को जीवन का आधार मानते हैं। एर्दोगन को भी पता चलेगा कि पर्यटकों के लिए बनाए गए सुन्दर स्थलों की चाहत भी तभी है जब सबसे ऊपर मानवता होगी। भारत के लोगों ने तो यह भुला दिया था कि तुर्क ने कभी नालन्दा को उजाड़ दिया था। नई सोच के साथ काफ़ी संख्या में भारतीय तुर्कि में जाने लगे थे वहाँ के लोगों ने भी बांह फैलाकर स्वागत किया लेकिन सरकार के कट्टरवादी रवैये ने सब कुछ बदल दिया।

–सुरेश पारीक,
वरिष्ठ पत्रकार

पर्यटन की दिशा में ऐतिहासिक परिवर्तन

डॉ. कैलाश सोडाणी

पर्यटन उद्योग दुनियाँ भर में आर्थिक विकास एवं रोजगार का महत्वपूर्ण जनक रहा है। भारत के पर्यटन उद्योग ने लगभग 8 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान किया है। विदेशी पर्यटकों से हमारे विदेशी मुद्रा के भंडार को ताकत मिल रही है। वर्ष 2023 में लगभग 60 लाख विदेशी पर्यटक भारत दर्शन हेतु आए हैं वैश्विक पर्यटन में भारत 14वें स्थान पर है। सरकार का लक्ष्य है, रोजगार आधारित विकास के माध्यम से भारत को वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन केन्द्र के रूप में खड़ा करना हैं।

भारतीय संस्कृति में देशाटन का महत्वपूर्ण स्थान है धार्मिक पर्यटन तो हजारों वर्षों से हमारी रगों में बसा हुआ है। हमारे देश में धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार जीवन की सार्थकता के लिए हर भारतीय का कम से कम एक बार चार धाम यात्रा पर जाना एक खूबसूरत स्वप्न होता है जिसकी पूर्णता पर परिवार में खुशियों का वातावरण बनता है। चार धाम की यात्रा की सोच के पीछे संपूर्ण भारत दर्शन ही हैं।

मूल विषय यह है कि आजादी के बाद लंबे समय तक देश के नीति निर्माता चार धाम, महाकुंभ, तिरुपति बालाजी, वैष्णोदेवी, महाकालेश्वर, अयोध्या आदि को नजरअंदाज करते हुए ताजमहल, लाल किला, चारमीनार आदि में ही पर्यटन की तलाश कर रहे थे परिणाम कमजोर ही आने थे, क्योंकि हमारी दिशा ही गलत थी।

पर्यटन की दिशा में ऐतिहासिक परिवर्तन

तिरुपति बालाजी, वैष्णो देवी, अयोध्या, उज्जैन में आधारभूत संरचना में सुधार के बाद बिना किसी मार्केटिंग के आज लाखों यात्रियों का तांता लगा हुआ है। अभी हाल ही में प्रयागराज के महाकुंभ में 66 करोड़ लोगों का स्वयंमेव पहुंचना देश के पर्यटन उद्योग में परिवर्तन की एक क्रांतिकारी गूंज है यह एक गौरवशाली शुभारंभ है। विश्व में किसी एक पर्यटन केंद्र पर पहुंचने वालों की यह सबसे बड़ी एवं ऐतिहासिक संख्या हैं। आस्था और व्यवस्था का समागम कुंभ पर पाकिस्तानी पत्रकार खालिद उमर ने जिन शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान की है, काबिले तारीफ है -

धरती पर मानवता का सबसे बड़ा जमावड़ा। जहां प्रत्येक दर्शनार्थी आनंद एवं परमानंद के सरोवर में आकंठ डूबा हुआ था। इस आयोजन में कोई खून खराबा नहीं, कोई हिंसा नहीं, कोई घटना - दुर्घटना नहीं, कोई राजनीति नहीं, कोई धर्मांतरण नहीं, कोई संप्रदाय नहीं, कोई भेदभाव नहीं, कोई व्यापार-व्यवसाय नहीं, केवल और केवल आस्था, विश्वास और भावनाओं का संगम था, चारों ओर खुशियों का सराबोर था। करोड़ों लोगों के जनसमूह के बावजूद न कोई शिकायत, ना कोई आरोप-प्रत्यारोप।

मानवता एवं ब्रह्मांड के मध्य जो संबंध है उस पर आधारित है कुंभ।

कुंभ मेले का हर अनुष्ठान ग्रहों, नक्षत्रों और ब्रह्मांड की गतिशीलता से जुड़ा हुआ है। आधुनिक विज्ञान से बहुत आगे हिंदू धर्म हमें मानवता एवं ब्रह्मांड के बीच के संबंधों को दर्शाता है। यह सिद्ध करता है कि हिंदू धर्म का ज्ञान अत्यंत श्रेष्ठ एवं पुरातन हैं। हिंदू धर्म केवल प्रकृति के साथ सामंजस्य नहीं रखता है, अपितु हिंदू धर्म तो स्वयं ही प्रकृति हैं।

पर्यटन की दिशा में ऐतिहासिक परिवर्तन

पर्यटन में परिवर्तन की इस गूंज ने हमें यह बतला दिया है कि अब तक देश में पर्यटन की दिशा एवं दर्शन ही गलत था। तत्कालीन सरकारों ने हमारी आस्था एवं भावनाओं के केन्द्रों को भूलकर विदेशी आक्रांताओं द्वारा निर्मित भवनों को पर्यटकों के लिए आदर्श मान बैठे। यह लार्ड मैकाले द्वारा निर्मित सोच का ही नतीजा है जिसमें हम विदेशी भाषा, विदेशी वेशभूषा एवं विदेशी भोजन को हमारी अपनी भाषा, वेशभूषा एवं भोजन से श्रेष्ठ समझ बैठे। इसी कमजोर मानसिकता के कारण 50-60 वर्षों तक देश का पर्यटन गलत रास्तों पर भटकता रहा। दिशा ही गलत होने से पर्यटन उद्योग तेजी से बढ़ नहीं पाया।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण एवं प्रयागराज के महाकुंभ से देश के पर्यटन उद्योग को अब जाकर सही दिशा मिली है। धार्मिक आस्था के पावन स्थलों के साथ-साथ भारत पर प्रकृति की भी भरपूर मेहरबानी है, हिमालय की शीतल कंदराओं से लेकर कल-कल करती नदियां, रेगिस्तानी टीलें, हजारों किलोमीटर तक हमें स्पर्श करती समुद्री लहरों से युक्त भारत पर्यटन की दृष्टि से बहुत धनाढ य हैं।

नि: संदेह अब हमें धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन को सर्वोपरि मानते हुए देश में आधारभूत सुविधाओं में तेजी से सुधार अपेक्षित हैं। गंदगी एवं अतिक्रमण को समाप्त करना होगा। स्वच्छता पर्यटक की पहली आवश्यकता है, इसे समझना होगा। तभी जाकर पर्यटन को मिली सही दिशा का, सही उपयोग सम्भव हो पायेगा।

–डॉ. कैलाश सोडाणी,
कुलगुरु, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

भीलवाड़ा के कई गांवों में भीषण गर्मी में पीने के पानी का संकट

भीलवाड़ा, (निसं)। भीषण गर्मी में गांवों में पीने के पानी का संकट बना हुआ है। ग्रामीणों को पीने के पानी की किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। पानी की किल्लत ने उनका जीना मुहाल किया हुआ है। ग्रामीण पानी खरीदकर काम चला रहे हैं। घरों में बंधे हुए पशु पानी के लिए तरस रहे हैं। कई बार विभाग के चक्कर लगाने के बाद भी सुनवाई नहीं हो पा रही है।

- **कंकरोलिया माफी गांव की महिलाएं टेक्सी से 11 किमी दूर कोटड़ी उपखंड मुख्यालय पर चम्बल प्लांट पर पहुंची, प्रदर्शन किया**
- **महिलाओं ने अधिकारी को खरी-खोटी सुनाई और कहा कि पानी की कमी से हमारे पशु मर रहे हैं, महीने में चार दिन पानी आता है**

कंकरोलिया माफी गांव की महिलाओं ने पानी की समस्या को लेकर प्रदर्शन किया।

क्षेत्र के सातोला का खेड़ा ग्राम पंचायत क्षेत्र के कंकरोलिया माफी गांव की महिलाओं ने पानी की समस्या को लेकर प्रदर्शन किया। सोमवार को कंकरोलिया माफी गांव की महिलाएं टेक्सी में सवार होकर करीब 11 किलोमीटर दूर कोटड़ी उपखंड मुख्यालय पर चम्बल प्लांट पर पहुंची और प्रदर्शन करते हुए अधिकारी को खरी-खोटी सुनाई। महिलाओं ने कहा कि पानी की कमी से हमारे पशु व जानवर मर रहे हैं, महिलाओं ने कहा कि महीने में चार दिन पानी आता है और वो भी समय पर नहीं आता है और महीने में चार दिन आता वो भी मात्र 10-20 मिनट ही पानी आता है। महिलाओं ने ज्ञापन देकर मांग की है कि चम्बल पाइप लाइन से अवेध कनेक्शन ले रखे हैं, जिन्हें जल्द से जल्द हटाने चाहिए और अगर चम्बल का पानी सुचारु रूप से चालू नहीं हो तो महिलाओं ने तीन दिन का समय दिया और महिलाओं ने कहा कि तीन दिन में पानी का समाधान नहीं हुआ तो कंकरोलिया माफी की महिलाएं धरना प्रदर्शन करेंगी और जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। इस दौरान उमा देवी ओझा, श्यामू देवी सुथार, कमला देवी, गीता देवी जोशी, गुलाब ओझा सहित बड़ी संख्या महिलाएं मौजूद रही।

भीषण गर्मी से जनजीवन प्रभावित

जोधपुर, (कासं)। शहर में पड़ रही भीषण गर्मी से पूरा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। चिलचिलाती धूप के कारण दिन में बाहर निकलना मुश्किल होता जा रहा है। सोमवार को भी सुबह से ही तेज धूप ने बेचैनी बढ़ा दी। सुबह से ही तेज गर्मी थी जिससे लोग परेशान हुए। जोधपुर शहर में दोपहर में तल्ख धूप के चलते शहर के मुख्य बाजार व सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहा। लोग अपने-अपने तरीके से धूप से बचाव के जतन करते दिखे। घर में पंखे-कूलर भी अब गर्म हवा फेंकने लग गए हैं। यहां दिन के साथ रात का तापमान भी बढ़ रहा है। सोमवार को जोधपुर शहर में अधिकतम तापमान 42 और न्यूनतम तापमान 31 डिग्री सेल्शियस दर्ज किया गया।

भीषण गर्मी के बीच नौतपा भी 25 मई से शुरू हो जाएगा, जिसके बाद 25 मई से 9 दिन तक भीषण गर्मी का दौर रहेगा। यानी 25 मई से 2 जून तक पूरे राजस्थान में नौतपा सक्रिय रहेगा और गर्मी का प्रकोप और ज्यादा बढ़ जाएगा। वहीं दिन और रात के तापमान में भी बदलाव की संभावना है। नौतपा खत्म होते ही लोगों को मानसून का बेसब्री से इंतजार रहेगा। ऐसे में मौसम विभाग का कहना है कि मई के आखिर या जून के शुरू में प्री-मानसून की गतिविधियां एक्टिव होने की संभावना है। ऐसे में नौतपा के खत्म होते ही राजस्थान के कई जिलों में प्री-मानसून बारिश की गवितिविधियां शुरू हो जाएगी।

राशिफल मंगलवार 20 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र सायं 7:12 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 2:50 तक, बवकरण प्रात: 5:52 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 7:36 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज द्विपुष्कर योग और राजयोग सूर्योदय से प्रात: 5:22 तक है। आज अष्टमी तिथि का क्षय हुआ है। आज कालाष्टमी, त्रिलोकनाथ अष्टमी है। पंचक प्रात: 7:35 से आरम्भ होगा। आज सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश रात्रि 12:25 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:02 से 10:43 तक, लाभ अमृत 10:43 से 2:04 तक, शुभ 3:44 से 5:25 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:06

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी, आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों कार्यों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मानसिक तनाव रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।